ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

रघुवीर सहाय की अभिव्यंजना शिल्प

प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
पांडवेश्वर कॉलेज,
पश्चिम बंगाल

सारांश

रघुवीर सहाय का अभिव्यंजना शिल्प अत्यंत समृद्ध है । वे काव्य भाषा और शिल्प के धरातल पर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति, अभिव्यंजना के धरातल पर की है । सामान्य भाषा ,काव्य भाषा और जन भाषा उनकी कविता की सबसे बड़ी ताकत है । उनके काव्य में बिम्ब,प्रतीक, आँचलिक भाषा,तत्सम शब्दों की बहुलता, उर्दू और फारसी शब्दों का प्रयोग खुलकर हुआ है।

मुख्य शब्द : बिम्ब के बिविध रूप, चाक्षुष बिम्ब, रस बिम्ब, चित्र बिम्ब , शब्द बिम्ब,प्रतीक ,सपाट्ब्यानी, अखबारी भाषा

प्रस्तावना

"भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मन के भावों और विचारों को प्रकट किया जाता है और दूसरों के भावों और विचारों को जाना जाता हैं।"[1]

भाषा अभिव्याक्ति का सशक्त माध्यम है। मनुष्य अपने मन या विचारों को लिखकर या बोलकर दूसरों पर प्रकट करते हैं। भाषा मनुष्य की आवश्यकताओं कि पूर्ति का सबसे बड़ा माध्यम है।

रघुवीर सहाय के काव्य में सामान्य भाषा और काव्य भाषा की प्रचुरता है सामान्य भाषा और काव्य भाषा के सम्बंध में डॉ, शोभा साहेब राणे लिखती हैं –" सामान्यतः जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है वह सामान्य भाषा कहलाती। सामान्य भाषा और काव्य भाषा में अंतर होता है। सामान्य भाषा के शब्द दैनिक जीवन में रुढ़ होते हैं। सामान्य भाषा वहीं समाप्त हो जाती है जहाँ उसे समझ लिया जाता है।काव्य भाषा सामान्य भाषा की अपेक्षा अधिक गहन अर्थ बोध कराने वाली, अनेक अर्थछायाओं से युक्त होती है। कविता कि भाषा सामान्य भाषा की तरह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती,बल्कि उससे कहीं अधिक गहन अर्थ देने बाली होती है।"[2]

सामान्य भाषा हि मनुष्य कि निज भाषा है। इस भाषा की जीवन काल भले ही कम है पर देश की अधिकांश लोगों कि इन्हीं सामान्य भाषा के सहारे दैनिक जीवन की आवश्यकतओं कि पूर्ति करते हैं। काव्य भाषा में अर्थ कि गहनता है।यह बोलचाल कि भाषा नही बल्कि गहन अर्थ सम्प्रेषण का माध्यम बन पड़ती है। आदिकालीन हिंदी के प्रथम आदि कवि सरहपा ने सामान्य भाषा अर्थात देशी बोलचाल की भाषा कि वकालत अपनी कविताओं में की हैं। विद्यापति ने भी देशी वयना अर्थात सामान्य भाषा को अभिव्यक्ति की भाषा मानते हुए इस भाषा को मीठी भाषा कहा है।

सामान्य भाषा मनुष्य कि अनुभूति पर असर कम डालती है। यह तो केवल मनुष्य के क्रियात्मक रूप को उजागर करती है। इस भाषा में मर्म की न्यूनता होती है और कर्म अधिकता होती है। काव्य भाषा में दार्शनिक चिंतन की तीव्र अनुभूति है। इस भाषा में संवेदनाओं के कई रूप दर्शन, चिंतन,और मनन की बुनियाद पर खड़ी है।

इस सम्बंध में अनंत मिश्र लिखते हैं – "वह (सामान्य भाषा) एक कामचलाऊ ढ़ंग की अभिव्यक्त पद्धति मात्र होती है। कविता की भाषा समस्या दूसरी है। वह एक चिंतन और अनुभव को आकार देने वाले शब्दों की अपेक्षा रखती है। अमूर्त जीवनाभुवों,मनारूस्थितियों और संवेदनाओं के मौन मुखर स्वरों की आंतरिक से आंतरिक तन्मयता,जटिलता और उद्वलेन को एक जीवंत प्रक्रिया का रूप देना काव्य भाषा का सहज गुण होता है। दूसरे शब्दों में काव्य भाषा में सृजनशीलता होती है। रचाना कि प्राणवता होती है।वास्तव में कविता और सामान्य भाषा के बीच रचनात्मकता और सामान्य कथन का अंतर हुआ करता है। यों हर शब्द का कुछ न कुछ अर्थ रहता है और इस संदर्भ में उसकी प्राणवता असंदिग्ध है, पर कविता संदर्भ में शब्द और अर्थ की संपृक्ति की विशेष अपेक्षा, कवि को हुआ करती है क्योंकि एक समय के बाद शब्द अपने पूर्व अर्थ को खो देते हैं इसलिए उसकी शक्तिमता घटती है।"[3]

भाषा की शुद्ध माप तौल की इकाई व्याकरण है। जिसके द्वारा हम अपनी वाणी को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने और सिखने के लिए हम व्याकरण की पैमाने पर वजन करते हैं और उस पैमाने से उतार कर साहित्य की दुनिया में सामान्य भाषा और काव्यभाषा के रूप में विचरण करने के लिए छोड़ देते हैं । सामान्य भाषा की भी एक परम्परा होती है। वह साहित्य की व्यवस्थाओं से संघर्ष करती है। संघर्ष के बाद उसमें टूटन, घर्षण और काव्य भाषा के प्रति आकर्षण होता है। यहीं आकर्षण ही सामान्य भाषा की परिवर्तन है। इस सम्बंध में डॉ. सियाराम लिखते हैं–

"सामान्य भाषा की एक व्याकरणिक व्यवस्था होती है।जब भाषा काव्य भाषा बनना चाहती है तो उस व्यवस्था को तोड़ना और एक नवीन व्यवस्था को स्वीकार करना पड़ता है। यही पुनर्व्यवस्था है।.. व्याकरण के बंधन को ओढ़े हुए काव्य के रूप में जो नई भाषा सामने आती है, वह जन्म नहीं, पुनर्जन्म है। व्यवस्था नहीं पुनर्यव्यस्था है।"[4]

रघुवीर सहाय के काव्य भाषा के सम्बंध में विद्वानों की अवधारणाएँ –

रघुवीर सहाय के काव्य भाषा में शब्दों का कोई अलगाव नहीं और न बदलाव कविता केवल शब्द है। फिर भी उन कविता की शब्दों में कहीं न कहीं नयेपन का एहसास है। जो नये अनुभव और नई भाव भूमि कि ओर और इशारा करता है। जब कवि इस शब्द को साहित्य में व्यंजित नहीं कर पाते हैं। तब वह कहते हैं शब्द और भाषा का अस्तित्व आज नहीं रह गया है। एक शब्द में कई अर्थ होते हैं और उस अर्थ में भी एक अलग स्वतंत्र अर्थ होते हैं। आवृति और लय में भी स्वतंत्र अर्थ है। जो शब्द और अर्थ को नये संकेत की ओर पहल करता है। इस सम्बंध में नामवर सिंह लिखते हैंरू–

"कोई नया शब्द नहीं है। फिर भी यह एहसास अवश्य होता है कि संकेत किसी नए अनुभव की ओर है। यदि अनुभव किसी नए शब्द द्वारा व्यंजित नहीं किया गया है तो इसलिए कि स्वयं कवि की जिज्ञासा भी यही है कि 'आज शब्द नहीं रहा' और न' 'भाषा' ही है। शब्द हो तो वह जो 'चीजों के आर–पार दो अर्थ मिलाकर एक स्वच्छ्न्द अर्थ दे।"[5]

रघुवीर सहाय के काव्यभाषा में अलंकारों का कोई स्थान नहीं है। अलंकारों की चमक में भाषा की गम्भीरता नष्ट हो जाती है। काव्य भाषा संवेदनाओं तक पहुँचने का सशक्त माधयम है। मानवीय संवेदनाओं को समृद्ध करने का सबसे बड़ा प्रभावशाली साधन काव्य भाषा है। काव्य भाषा मानवीय संवेदनाओं को निर्मित करने का सबसे बड़ा साधन है। पत्रकारिकता की भाषा में भी मानवीय संवेदनाओं के प्रतिबिम्ब की झलक है। इस सम्बंध में कृष्ण कुमार लिखते हैं –

"काव्य भाषा अलंकारों के आधार पर नहीं,मानवीय संवेदनाओं को समृद्ध करने के साधनों के आधार पर निर्मित होती है।... पत्रकारिकता की भाषा में इस काव्यभाषा के प्रतिबिम्ब के विषय पर बात की जा रही है।"[6]

रघुवीर सहाय की कविता भाषा शैली का अनोखा प्रयोग हुआ है। इस शैली के अंतर्गत ताल का प्रयोग भी हुआ है। इस ताल और गति में भी कविता साधारण भाषा कि तरह व्यंजित होती है। इस साधारण भाषा कि गति में उर्दू की शैली का सहारा लेना पड़ा है। इस शैली को हिंदी काव्य भाषा में प्रयोग नवीन शैली के रूप में हुआ है। इस प्रकार के काव्य भाषा शैली के सम्बंध में रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"मैंने अपनी कविता के इस चरण तक पहुँचते–पहुँचते शैली में ताल और गति के कुछ प्रयोग किये हैं। ताल को साधारण बोलचाल की ताल के जैसा बनाने में कुछ कविताओं में जैसे'अनिश्चय',और 'मुँह अंधेरे' तथा 'दुर्घटना'में थोड़ी बहुत सफलता मिली है। हलांकि उस कोशिश में भी कहीं कहीं उर्दू की भाषा गति बंधी हुई शैली का सहारा लेना पड़ा है। भाषा को भी साधारण बोलचाल की भाषा लाने की कोशिश रही है। मगर उसमें भी कहीं कहीं भाषा की फिजूलखर्ची करनी पड़ी है ।"[7]

रघुवीर सहाय के काव्य में बिम्ब योजना के विविध रुप

काव्य रचना के अंतर्गत बिम्ब का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।काव्य रचना में बिम्ब का सरोकार भी विस्तृत है। एक प्रकार से बिम्ब काव्य रचना की महत्वपूर्ण शैली है। अंग्रेजी शब्द "इमेज" का हिन्दी रुपानंतरण 'बिम्ब' है। बिम्ब एक प्रकार मानसिक छायाचित्र है, जिसे काव्य या रचना में शब्द और कल्पना के द्वारा ऐंद्रिय भाव में निर्मित काल्पनिक चित्र है। बिम्ब मानवीय अनुभूति है। जिसे हम रचनाकार की अनुभूतियों में शब्द चित्र के माध्यम से उनकी रचनाओं में विभिन्न जगहों पर विभिन्न रुपों में देख सकते हैं।

बिम्ब के सम्बंध में डॉ शोभा साहेब राणे लिखती हैं – "बिम्ब को अर्थचित्र, मानसचित्र अथवा कल्पनाचित्र भी कहा जा सकता है। साहित्य में बिम्ब का अर्थ कलाकार की उस क्षमता से है, जिसके आधार पर वह अतीत की घटनाओं और विषयवस्तु का रंग, ध्वनि, गति, आकार– प्रकार सहित देश, काल,परिस्थितियों को ध्यान में रखकर शब्द चित्रों में वर्णित करता है।"[8]

काव्य में उपमा,रूपक, और मानवीयकरण जैसे अलंकारों में बिम्ब का स्वरुप चित्रण होता है। समासोक्ति,मुहावरे लोककथ,और प्रतीकों द्वारा भी बिम्ब को स्पष्ट किया जाता है। बिम्ब पाठक या दर्शक के पूर्वानूभितियों और भावनाओं का जीवंत चित्रण है। जिसमें पाठक या दर्शक की ऐंद्रियता विद्यमान रहती है। इस सम्बंध में सतीश कुमार लिखते हैं – "काव्य में रुपक, उपमा, मानवीयकरण, समासोक्ति, मुहावरे, लोक्कथ, प्रतीक आदि द्वारा बिंबो को स्पष्ट किया जाता है। इसका कारण यह है कि बिम्ब हमारी पूर्वानुभूतियों एवं भावनाओं का मूर्तिकरण है, जिसमें इंद्रिय उपेक्षित रहती है।"9

रघुवीर सहाय की कविताओं में बिम्ब विधान के कई रुप देखे जाते हैं जिसमें प्रमुख हैं रू–

रस बिम्ब

रस बिम्ब के अंतर्गत रघुवीर सहाय की कविता 'बसंत' है। जिसमें उन्होंने रस बिम्ब के स्वरुप को

चित्रित किये हैं। बसंत ऋतु में फलों का राजा आम के मीठे सरस फलों की आशाओं की सरसता 'बसंत' कविता में झलकती है। कवि लिखते हैं –

"सरस फलों की मीठी आशाओं की उड़े सुवास
मिले,प्यार में सदा जीत हो नहीं कभी हो हार
जिनको प्यार नहीं मिल पाया उन्हें फले मधुमास,
पत्झर के बिखरे पत्तों पर,चल आया मधुमास।"[10]

'बसंत' कविता में रस बिम्ब के एक और उदहारण फूलों के नवल कोपलों के रुप में चित्रित हैं –

"नवल कोपलों से रस गीले होंठ खुले हैं
मधुपराग की अधिकाई से कंठ रुँधा है
तड़प रही है वर्ष वर्ष पर मिलने की अभिलाष
पतझड़ के बिखरे पतों पर चल,आया मधुमास।"[11]

रघुवीर सहाय की कविता 'हँसो,हँसो जल्दी हँसों' कविता में रस बिम्ब विद्यमान है। यह रस तो अनुभूतियों की है। हँसी एक मानवीय अनुभूति है पर रघुवीर सहाय की इस कविता में भी रस बिम्ब की अनुभूति होती है।कवि लिखते हैं –

"हँसों अपनों पर न हँसना क्योंकि उसकी कड़वाहट
पकड़ ली जाएगी और तुम मारे जाओगे ।"[12]

रघुवीर सहाय की कविता 'दयावती का कुनवा' में गरीब,असहाय व्यक्ति की दयनीय अवस्था की रस बिम्ब की अनुभूति की झलक है। कवि लिखते हैं रू–

"बहुत चाय और सिगरेट पीते हुए
अपनी मामूली तनख्वाह की शर्म से।"[13]

रघुवीर सहाय की कविता 'मनुष्य मछली युद्ध' शीर्षक कविता में भी रस बिम्ब विधान की झलक है। मनुष्य मछ्ली की नश्ल को तगड़ी करने में लगे हैं क्योंकि इस नश्ल में भी अच्छी स्वाद की कल्पना है। कवि लिखते हैं –

"हम मछ्ली की नश्ल तगड़ी कर रहे हैं
ताकि यह स्वादु हो और महंगी भी।"[14]

गंध बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्य में गंध बिम्ब की अनुभूति है। गंध हमारी ज्ञान इंद्रियाँ की सबसे बड़ी संवेदी अंग है। रघुवीर सहाय की कविता 'सीढ़ियों पर धूप में' और'आत्महत्या के विरुद्ध'काव्य संकलन कविताओं में गंध बिम्ब योजना की झलक है। 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता में स्त्री की शरीर की गंध भीड़ से आती हुई प्रतीत होती है। लोगों की भीड़ की गंध भी मलीन,मटमैले और इंतजार की होती है। रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"गंध भीड़ से नहीं स्त्री की पीठ से आती है
रँगी– चूँगी पंजाबिन,धूली–पूँछी बंगालिन रुखी मराठिन के
सर से मरे इंतजार की गंध,भीड़ में इंतजार ..
भीड़ में मटखोली गंध मिली
भीड़ में
मुझे नहीं मिली मेरी गंध
जब मैंने साँस भर उसे सूँघा।"[15]

रघुवीर सहाय की कविता 'बसंत' में दूर आमों की मुकूल की गंध आती है। दिन दृरात श्रम करने वाले श्रमिकों को बसंती सुभाष थकान दूर करती है। पतझरके पीले पत्तों से भी मधुमास की गंघ आती है। रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"आती उड़कर गंध बोझ से थकती हुई सुवास
पतझर के पीले पतों पर चल आया मधुमास ।"16

गंध सुरभी की थपकियों से भी आती है। जब थपकियाँ पड़ती है तब नींद अच्छी आती है। इस नींद में भी मन के फूल आँगन में महकने आ जाते हैं, और इस महकने की गंध से मन में महकन की गंध से महमह होने लगती है। रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"सुरभी की थपकियों से आ नशे में
आज होंगी नींद,सुख की नींद तेरी
क्योंकि मन के फूल आँगन में महकने आ रहे हैं।"[17]

चित्र बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्य में चित्र बिम्ब सुंदर और रमणीय सौंदर्य के रुप में चित्रित है। इस योजना के अंतर्गत हमारी संवेदी ज्ञान इंद्रियाँ आँखों की भूमिका अहम होती है। पाठक जब कविता पढ़ते हैं तब उनकी आँखों के सामने चित्र दिखलाई पड़ता है यही चित्र कविता में चित्र बिम्ब योजना का विधान है।'मुँह अंधेरे' कविता में रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"रसोईधर से निकलते बिल्लियों की आँखें
धीरे धीरे पुतलियाँ उनकी सिकुड़ती हैं,
छायाचित्र के एक दृश्य जैसा
चाँद सुबह का होता जाता उदास
सुखते फूल में जैसे अंतिम सौरभ।" 18

इसी प्रकार 'सायंकाल' शीर्षक कविता में कवि सूर्य का चित्र अंकित करते हुए लिखते हैं रू–

"खिंचा चला जाता है दिन का सोने का रथ
ऊँची नीची भूमि पार
अब दिन डूब रहा है जैसे
लगती बहूओं की भीड़ कूएँ पर
मंजी गगरियों पर से किरणें घूम घूम
छिपती जाती पनिहारिन के साँवल हाथों की चूड़ियों में।"[19]

घर पर रखे पौधे खिड़की से बाहर धूप की ओर झुके जा रहे हैं। गोरैया पक्षी घोसले निर्माण तिनके प्रत्येक वर्ष की तरह कार्निस के पेड़ पर ला रहे हैं। गुलाब फूल भी कसे हुए हैं और कुछ फूल झरने जा रहे हैं। खिड़की,गोरैया और फूल के चित्र रघुवीर सहाय ने इस कविता में दिखलाया हैं। इस संदर्भ में रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"लम्बी खिड़की पर रक्खे पौधे
धूप की ओर बाहर झुके जा रहे हैं
हर साल की तरह गोरैया
अब भी कार्निस पर ला ला करके धरने लगी है तिनके
हालाँकि वह वह गोरैया नही...
कितने सही हैं ये गुलाब
कुछ कसे हुए और कुछ झरने– झरने को।"[20]

शब्द बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्य में 'शब्द बिम्ब'बिखरे पड़े हैं। शब्द बिम्ब 'सीढ़ियों पर धूप में' 'हँसो– हँसो जल्दी हँसो' और 'आत्महत्या के विरुद्ध' काव्य संकलन की कविताओं में देखी जाती है।'फिल्म के बाद' चीख' कविता में शब्द बिम्ब योजना की झलक मिलती है। रघुवीर सहाय संसद के सम्बंध में शब्द बिम्ब के बारे में लिखते हैं –

"संसद एक मंदिर है जहाँ किसी को द्रोही कहा नहीं
जा सकता
दूधपिये मुँह पोछे आ बैठे जीवनदानी गोंद–
दानी सदस्य तोंद सम्मुख धर।"[21]

'समझौता' कविता में रघुवीर सहाय शब्द बिम्ब के उदहारण देते हुए लिखते हैं –

"अरू न कर मोहित कनखियों से मुझे
अब शांत !
तुमने दे चरण की चाप,
पथ घटता स्वयं है आप
मन पर जीत जाने से ।" [22]

'खड़ी बोली' शीर्षक कविता में रघुवीर सहाय बिम्ब का उदहारण प्रस्तुत इन पंक्तियों के द्वारा करते हैं–

"भाषा की ऊष्मा से फुटते नहीं हैं शब्द
भींगी पोटली में अब।
कविता बनाकर मोड़कर रख देता रहा हूँ
वो दिन में खोलकर पढ़ लेता रहा हूँ
आड़े तिरछे अँखुए चिटकी दगरों में झाँकते मिले हैं।"[23]

रुप बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्य में रुप बिम्ब के उदहारण प्रचुर दिखाई पड़ती है । रुप कविता का बाहरी आवरण है, जो कविता की चमत्कार रुप बिम्ब के धरातल पर दिखने लगता है। "एक लड़की" कविता में रुप विधान का दृश्य लड़की की उँगलियों से छलका,डुबा हुआ उजाला,निराश बाँहें,उदास कंधे के रुप में शांत हृदय में दिखता है।

रघुवीर सहाय लिखते हैं –

तेरी उँगलियों से छ्लका
डूबा हुआ उजाला
तेरी वे निराश बाँहें
तेरे वे उदास कंधे
तू सहम गई है भय से
कि शांत है हृदय से।"[24]

रघुवीर सहाय की कविता "हरी गहरी रात" में रुप बिम्ब मुँह की हँसी, आँखों की खोल,शाम की चुप्पी,हरी गहरी रात की हरियाली रुप के दृश्य उपस्थित है। कवि लिखते हैं–

"झुककर देखता हूँ
एक के मुँह पर हँसी थी
रुका ज्यों ही,आँख उसने खोल दी
शाम से चुप हरी गहरी रात आखिर वक्त पा
उसके पिता से बोल दी ।" [25]

रघुवीर सहाय की 'खड़ी स्त्री' कविता में दुबली –पतली, थकी, स्त्री का रुप बिम्ब वर्णन है। रघुवीर सहाय लिखते हैंरू–

"वह खड़ी थी
दुबली और थकी थी
और मुझे लगा कि वह खड़ी ही रहेगी
क्योंकि ऐसे ही तो पूर्ण होती है।"[26]

स्पर्श बिम्ब

रघुवीर सहाय के काव्यों 'बसंत','गजल' 'सायंकाल', 'मुँह तेरे अंधेरे', 'हमने यह देखा', और 'पढ़िए गीता' इत्यादि कविताओं में स्पर्श बिम्ब मौजूद है। 'बसंत' कविता में स्पर्श बिम्ब इस प्रकार आया हैं –

"गरम गुलाबी शरमाहट सा– हलका जाड़ा
स्निग्ध गेहुँए गालों पर कानों तक चढ़ती लाली जैसा।"[27]

'गजल' कविता में स्पर्श बिम्ब शरीर में तपती ज्वर के रूप में देखी जाती है। बदन तीव्र ज्वर से उजाले प्रतीत हो रहे हैं। और इस तपती हूई शरीर की उष्मा का पता स्पर्श के द्वारा लगाया जाता है। रघुवीर सहाय स्पर्श बिम्ब की एहसास तप्त ज्वर के रूप में की है–

"तप्त है ज्वर से उजाले का बदन
उष्ण है स्पर्श तेरे गात का।"[28]

रघुवीर सहाय 'सायंकाल' कविता में स्पर्श बिम्ब की प्रतीति गोरी चिकनी पीठों से की है। इस चिकनी पीठों की अनुभूति स्पर्श के द्वारा ही की है। इस कविता में कवि चिकनी पीठों की अनुभूति धीरे–धीरे, आगे– आगे बढ़ते हुए क्रम से की है। जिस प्रकार साँझ की चमकीली रोशनी धीरे–धीरे बिखेरती हुई आगे मनोरम एहसास की ओर बढ़ती है। यह मनोरम एहसास ही स्पर्श अनुभूति है। इस कविता में कवि चिकनी पीठों की स्पर्श छिलकती हुई रोशनी से की है। कवि लिखते हैं –

"आगे–आगे गोरू जिनकी चिकनी पीठों
पर साँझ बिछ्ल कर चमक रही है ।"[29]

रघुवीर सहाय की 'मुँह तेरे अंधेरे' कविता में सुबह की ताजगी हवा की स्पर्श बिम्ब की अभिव्यक्ति है। सुबह की शीतल वायु,मनुष्य की शरीर में स्फुर्ति लाती है ।, सड़क पर गुजरती मवेशियों की ध्वनि श्रवण स्पर्श बिम्ब की ओर इशारा करती है। मंदिरों से आती हुई भजन की ध्वनि की भी श्रवण बिम्ब की ओर संकेत करती है। इस कविता में 'ध्वनि स्पर्श', शीतल 'वायु स्पर्श' की बिम्ब एक चित्रित की गई है। कवि लिखते हैं–

"सुबह के चार बजे, शेष हैं विश्राम के पल
सोती सड़कों को जगाते हैं नदी स्नान को जाने वाले
अस्फूट शब्दों के भजन झूलते हैं चलने के संग
उषा के शीतल रोमांच के संग काँपते हैं ।"[30]

रघुवीर सहाय 'हमने यह देखा' कविता में संवेदना शून्य स्पर्श बिम्ब को निरूपित करते हैं। जूते निर्माण के समय चमड़े में काँटी की स्पर्श की जाती है। जब जूते पहनकर लोग सड़क पर चलते हैं तब उसमें काँटी की स्पर्श होती है। अत इस कविता में कवि स्पर्श बिम्ब की ओर इशारा की हैं–

" यह क्या है जो इस जूते में पड़ता है
यह कील कहाँ से रोज निकल आती है
इस दुख को रोज समझना क्यों पड़ता है ।"[31]

रघुवीर सहाय की कविता 'पढ़िए गीता' में स्पर्श बिम्ब के उदहारण है। जिसके अंतर्गत मनुष्य की मार्मिक संवेदना काम करती है,जो दो दशाओं में होती है रू एक 'करूणा' और दूसरा 'हर्ष'इन दोनों की पहचान आँखों से निकलने वाली आँसुओं की स्थिति से होती है। यह आँसु धीरे–धीरे,आखों से निकलकर गालों की त्वचा को स्पर्श करते हुए नीचे की ओर आती है। इस प्रकार आँसु की बूँद त्वचा को स्पर्श करना ही स्पर्श बिम्ब के उदहारण है। कवि इस कविता में 'गीली' और ढ़ीली' इन दो शब्दों के द्वारा स्पर्श बिम्ब को व्यंजित की हैं–

"होंय कँटीली
आँखें गीली
लकड़ी सीली,तबियत ढ़ीली।"[32]

रघुवीर सहाय 'ये क्षण' कविता में स्पर्श बिम्ब का उदहारण शारीरिक क्रियाओं जैसे रूपागल आलिंगन, कातर चुम्बन को ध्यान में रखते हुए करते हैं। कहा जाए एक तरह से यह आलिंगन और चुम्बन में भी स्पर्श बिम्ब हैं। कवि लिखते हैं –

" ले जाऐंगे कुछ पागल आलिंगन
चुम्बन का,चुम्बन पर कातर चुम्बन का
ले जाऐंगे स्मृति,ये क्षण पूण्य स्मरण ।"[33]

रघुवीर सहाय के काव्य में स्वप्न बिम्ब के उदहारण विभिन्न जगहों पर देखी जाती है। "आत्महत्या के विरुद्ध" काव्य संग्रह की कविताओं में स्वप्न बिम्ब उदहरण मौजूद है। कवि "आत्महत्या के विरुद्ध" में स्वप्न बिम्ब के उदहारण में उलझन है, जो कई बार आती है । इस स्वप्न बिम्ब की उलझनें दिमागी उन्मांद से है। जो स्वप्न के रूप में तीन गुणा प्रभाव डालती है। कवि "गिरीश की मृत्यु" कविता में स्वप्न बिम्ब को व्यंजित कुछ इस प्रकार करते हैं –

"तीन रात लगातार मैंने सपने में देख मुझे तिगुना
उलझाया। हर बार मे घटा–घटाकर अपने को निकल
आया
मैं नहीं समझ पाया जब इतना भी क्यों हूँ जग
..स्वप्न बिम्ब–जाना पड़ा ।"[34]

रघुवीर सहाय के काव्य में स्वप्न बिम्ब के उदहारण खेत में सजी हुई क्यारियाँ है। इन क्यारियों में पानी लबालब भरा है। क्यारियों में से पटीला अँखूए झाँकते दिखलाई देती है नई जीवन की सपनें। "हँसो,हँसो जल्दी हँसो" कविता में रघुवीर सहाय लिखते हैं –

"खेत में सजी हुई क्यारियाँ थी
उनमें पानी भरा था
मैंने हाथ से उन्हें पटीला" [35]

निष्कर्ष

अतः रघुवीर का काव्य शिल्प,भाव शिल्प और कला शिल्प उन्न्त कोटि की है। उनकी भाषा में समाज की गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। जिनमें जो ताने दृबाने हैं वह आड़े तिरछे हैं, जो कविता की भाषा और शिल्प के धरातल पर एक नवीन ताकत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *बासु,कविता,नवीन हिंदी व्यावहारिक व्याकरण तथा रचना, गोयल ब्रदर्स प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2014,पृ0– 01*
2. *राणे,साहेब शोभा,रघुवीर सहाय का काव्य एक अनुशीलन,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,संस्करण 2013,पृ0–276*
3. *मिश्र,अनंत,स्वातंर्त्योतर हिंदी कविता, अन्नपूर्णा प्रकाशन,कानपुर, संस्करण 1998 पृ0–245–46*
4. *सियाराम, काव्य भाषा, शब्दशक्ति प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 1993, पृ0– 13*
5. *सिंह,नामवर,कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1968,पृ0–102*
6. *कुमार,कृष्ण,संचयिता रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण 2010,पृ0–137*
7. *सहाय,रघुवीर,आत्महत्या के विरुद्ध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण ,पृ0– 38*
8. *राणे,शोभा साहेब, रघुवीर सहाय का काव्य एक अनुशीलन,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली, संस्करण 2013,पृ0–257*
9. *कुमार,सतीश, नई कविता की प्रमुख प्रवृतियाँ, साहित्य रत्नाकर कानपुर, संस्करण 2012 पृ0– 30*
10. *शर्मा,सुरेश(सं),रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड़–1, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2000,पृ0–41*
11. *वही, पृ0–40*
12. *वही, पृ0–168*
13. *वही, पृ0–290*
14. *वही, पृ0–220*
15. *वही, पृ0–50–51*
16. *अज्ञेय(सं), दूसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2012,पृ0–140*
17. *पृ0–42*
18. *वही, पृ0–429*
19. *अज्ञेय (सं), दूसरा सप्तक,भारतीय,ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली, सं0,2012 पृ0– 151*
20. *शर्मा,सुरेश (सं0),रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड–1, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण 2000,पृ0 117*
21. *वही,पृ0 48*
22. *वही, पृ0– 117*
23. *वही, पृ0– 49*
24. *वही, पृ0–275*
25. *सहाय, रघुवीर, आत्महत्या के विरुद्ध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण2009, पृ0– 38*
26. *वही, पृ0– 36*
27. *वही, पृ0– 49*
28. *अज्ञेय(सं), दूसरा सप्तक,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012, पृ0–140*
29. *वही, पृ0– 144*
30. *वही, पृ0–153*
31. *वही, पृ0–151*
32. *सहाय, रघुवीर, सीढ़ियों पर धूप में, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृ0– 76*
33. *वही, पृ0–140*
34. *वही. पृ0–82*
35. *सहाय,रघुवीर, आत्महत्या के विरुद्ध, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2009,पृ0– 63.*